UP Board Notes Class 7 Hindi Chapter 36 वीर अब्दुल हमीद (महान व्यक्तित्व)

पाठ का सारांश

अब्दुल हमीद का जन्म 1 जुलाई, 1933 ई० को धामूपुर, गाजीपुर में हुआ। बचपन से ही अब्दुल की इच्छा वीर सिपाही बनने की थी। कक्षा 4 के बाद इन्होंने पढ़ना छोड़ दिया। घर के काम, सिलाई में इनका मन नहीं लगता था। इनके पिता और नाना पहलवान थे। इन्होंने भी सवेरे उठकर अखाड़े में कुश्ती के दाँव सीखना शुरू कर दिया। शाम को ये लकड़ी का खेल सीखते और रात को फौज और जंग के स्वप्न देखते। अपना स्वप्न पूरा करने के लिए 12 सितम्बर, को 1958 ई० को हमीद फौज में भर्ती हो गए। ये निशाना लगाने में सिद्धहस्त थे। सन् 1962 ई० में देश पर चीन का हमला हुआ। अब्दुल हमीद की मशीनगन् आग उगलने लगी। धीरे-धीरे उनके गोले खत्म हो गए। मशीनगन तोड़कर वह बर्फ की पहाड़ियों में रेंगकर निकल गए। इस मोर्चे की बहादुरी से वह लांस नायक बने। 12 मार्च, सन् 1962 ई० को हमीद को नायक हवलदार और कम्पनी क्वाटर मास्टर बनाया गया।

सन् 1965 ई० में पाकिस्तान के हमले से हमीद का खून खौल उठा। हिन्दू-मुसलमान मिलकर रणभूमि की ओर उमड़ पड़े। 10 सितम्बर, 1965 ई० को कसूर क्षेत्र में घमासान युद्ध हुआ। हमीद की एंटी टैंक बन्दूक ने आग उगलनी शुरू कर दी। इनका निशाना अचूक था। क्षणभर में हमीद ने तीन पैंटन टैंक नष्ट कर दिए। पाकिस्तानी हमलावरों को मुँह की खानी पड़ी। हमीद अपने प्राण हथेली पर रखकर हमला करते जा रहे थे। अचानक कोई चीज इनके सीने से टकराई। चारों तरफ अँधेरा ही अँधेरा छा गया 'अल्लाह' शब्द के साथ ये सन्नाटे में समा गए।

अब्दुल हमीद को देश पर कुर्बान हो जाने के लिए मरणोपरान्त परमवीर चक्र प्रदान किया गया। ये अपने त्याग और बलिदान से अमर हो गए।

https://www.evidyarthi.in/